त्रैमासिक

दिग्विजय कैम्पस

राजनांदगांव, जनवरी–मार्च 2018 वर्ष–2, अंक–5 (आंतरिक वितरण हेतु)

महाविद्यालय की हीरक जयंती में मुख्यमंत्री द्वारा

करोड़ों के लोकार्पण, भूमि पूजन के अतिरिक्त 38 लाख की सौगात

राजनांदगांव । महाविद्यालय के हीरक जयंती समारोह में माननीय मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी ने 1.40 करोड़ के अध्यापन भवन, 53 लाख के सौर संयंत्र और 45 लाख के हीरक जयंती उद्यान सहित 5.46 करोड़ के बालक एवं बालिका छात्रावास तथा 45 लाख की लागत से बनने वाले विवेकानंद सभागार का भूमिपूजन भी किया। इसके साथ ही महाविद्यालय में बीपीएड (बेचलर इन फिजिकल एजुकेशन) का पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की घोषणा की गई। साथ ही महाविद्यालय में मिट्टी एवं वाटर परीक्षण केन्द्र सहित सिकलसेल केन्द्र के लिए 38 लाख रुपये प्रदान करने की घोषणा की।

माननीय सांसद श्री अभिषेक सिंह की अध्यक्षता में संपन्न महाविद्यालय के दो दिवसीय हीरक जयंती समारोह के आज प्रथम दिन 14 फरवरी 2018 को मुख्यमंत्री ने अपने मुख्य अतिथि के संबोधन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों से कहा कि वे वैश्विक गांव की संकल्पना से जुड़े और नवीन टेक्नोलॉजी के साथ अध्ययन करने की प्रवृत्ति विकसित करें। सिर्फ किताबी ज्ञान से काम चलने वाली दुनिया नही हैं, इस प्रसंग में उन्होने अपने विदेश यात्रा का संस्मरण सुनाते हुए कहा कि कई देशों की स्वास्थ्य सुरक्षा एवं विज्ञान की व्यवस्था भारतीय प्रतिभाओं द्वारा संभाली जा रही है। भारत न सिर्फ विश्व गुरु था बल्कि आज भी है। महाविद्यालय के विकास की कड़ी में विगत दस वर्षों के क्रम को दर्शाते हुए उल्लेख किया कि यहां का 42 से 94 का सेट-अप स्वीकृत होने से महाविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था सुदृढ़ हुई है। यहां पढ़ने वाला हर विद्यार्थी सौभाग्यशाली है।

इसी क्रम में आपने महाविद्यालय के संस्थापक सदस्य पं. किशोरी लाल शुक्ल सहित महंत राजा दिग्विजय दास के योगदान का उल्लेख किया और डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी तथा गजानन माधव मुक्तिबोध जैसे साहित्यकारों से जुड़े इस संस्कारी संस्था को प्रदेश का सर्वाधिक गौरवशाली शिक्षण संस्थान बताया।

इससे पूर्व कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय सांसद श्री अभिषेक सिंह ने महाविद्यालय की छात्र संख्या का उल्लेख करते हुए प्रदेश का सबसे बड़ा महाविद्यालय होने का गौरव बताया।

साथ ही इस वर्ष जिले में खोले जाने वाले तीन नये शासकीय महाविद्यालयों की आवश्यकता का उल्लेख भी किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महापौर एवं जनभागीदारी समिति अध्यक्ष माननीय श्री मधुसुदन यादव और प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह, छात्रसंघ अध्यक्ष देवेन्द्र कुमार द्वारा मंचासीन समस्त अतिथियों का स्वागत किया गया। प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने अपने संबोधन में माननीय मुख्यमंत्री के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि हमने महाविद्यालय की आवश्यकता अनुसार जो कुछ भी मांगे रखी है वे विगत दस वर्षों में पूरी हुई हैं। इसलिए आज का दिन महाविद्यालय की ओर से आपके प्रति आभार प्रकट करने का दिन है।

हीरक जयंती के इस प्रथम दिवस के उघाटन मंच पर मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष के साथ महापौर माननीय श्री मधुसुदन यादव सहित माननीया श्रीमती सरोजनी बंजारे जी विधायक, डोंगरगढ़, माननीय श्री खूबचंद पारख जी उपाध्यक्ष, बीस सूत्रीय क्रियान्वयन समिति, छ.ग., माननीय श्री अशोक शर्मा जी पूर्व सांसद एवं पूर्व अध्यक्ष पाठ्य पुस्तक निगम, छ.ग., माननीय श्री लीलाराम भोजवानी जी पूर्व मंत्री एवं पूर्व अध्यक्ष ना.आ.निगम, छ.ग., माननीय श्री संतोष अग्रवाल जी समाजसेवी, राजनांदगांव, माननीय श्री रामजी भारती जी अध्यक्ष, अजजा. आयोग, छ.ग.,माननीया श्रीमती शोभा सोनी जी अध्यक्ष, समाज कल्याण बोर्ड, छ.ग.,माननीय श्री नीलू शर्मा जी अध्यक्ष, वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन, छ.ग.,माननीय श्री रमेश पटेल जी अध्यक्ष, राजगामी सम्पदा न्यास राजनांदगांव, और एलुमनी संयोजन समिति के संयोजक माननीय श्री अशोक चौधरी उपस्थित थे।

एलुमनी सम्मेलन

महाविद्यालय के दो दिवसीय हीरक जयंती का प्रथम दिन छात्र सम्मेलन के रुप में आयोजित था जिसमें पूर्व छात्र श्री अशोक चौधरी के संयोजन में महाविद्यालय के पूर्व छात्रों ने भारी संख्या में उपस्थिति देकर अपनी पुरानी संस्था के प्रति आभार प्रकट करते हुए अपने विद्यार्थी जीवन के रोचक अनुभव सुनाए। इस क्रम में साठ के दशक से लेकर विगत वर्षों के पूर्व छात्र उपस्थित थे जिसमें शिक्षा, व्यवसाय, कला से लेकर खेल और प्रशासनिक क्षेत्र में अपनी उपलब्धियां दर्शाने वाले एलुमनी ने अपने अनुभव सुनाएं। जिन प्रमुख लोगो ने इस अवसर पर अपने अनुभव सुनाएं वे थे श्री अशोक चौधरी, श्री भरत अग्रवाल, श्री सुनील बरडिया, श्री चुन्नीलाल शर्मा, श्री जयप्रकाश, श्री संजय जैन, श्री गिरिजा शंकर, श्री पोषण चन्द्राकर, श्री अजय शर्मा, श्री पुखराज बाफ्ना, श्री कैलाश शर्मा, श्री कविता वासनिक, श्री रोहित झा, श्री कुलदीप भाटिया, डॉ. पी. देवदास और श्री प्रदीप गांधी।

एलुमनी सम्मान

अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी श्री मृणाल चौबे, पूर्व प्राचार्य डॉ. हेमलता महोबे, माननीय श्री रामजी भारती जी अध्यक्ष, अजजा. आयोग, माननीय श्री खूबचंद पारख जी उपाध्यक्ष, बीस सूत्रीय क्रियान्वयन समिति, छ.ग., माननीय श्री रमेश पटेल जी अध्यक्ष, राजगामी सम्पदा न्यास राजनांदगांव, श्री संतोष अग्रवाल सहित लगभग 50 एलुमनी का सम्मान पत्र प्रदान कर मुख्यमंत्री के हाथों सम्मानित किया गया। इसके पहले राजनांदगांव शिक्षा मंडल को प्रदान किया जाने वाला सम्मान पत्र महाविद्यालय के संस्थापक सदस्य पं. किशोरी लाल शुक्ल के पुत्र गिरीश शुक्ल को प्रदान किया गया। समारोह का संचालन डॉ. चन्द्रकुमार जैन ने गरिमामय ढ़ग से किया।

समारोह के अंतिम चरण में पूर्व छात्रों द्वारा देर शाम तक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई जिसमें गायन, वादन से लेकर नाट्य प्रस्तुति शामिल थी।

छात्रों ने प्राचीन नगरी को देखा और समझा इतिहास को

महाविद्यालय के इतिहास विभाग के 118 छात्र/छात्राओं का दल विभागाध्यक्ष प्रो. पी. डी. सोनकर एवं प्रो. हीरेन्द्र ठाकुर के निर्देशन में प्राचीन नगरी खरौद, शिवरीनारायण तथा गुरूघांसीदास के जन्म स्थली विश्व के सबसे ऊंचे जैतखाम के दर्शन किये ।

इतिहास के छात्र/छात्राओं ने प्राचीन नगरी खरौद जहाँ लक्ष्यलिंग स्थापित है जो सोमवंशी राजाओं के समय का है मंदिर के संदर्भ में मंदिर स्थित शिलालेख भी देखें और प्राचीन छत्तीसगढ़ के इतिहास को समझे। रामायण कालीन शिवरी तथा भगवान राम के कहानी से जुड़ा हुआ स्थल शिवरीनारायण का दर्शन कर इतिहास के महत्व से रूबरू हुए ।

गुरूघासीदास जी के जन्म स्थल गिदौदपुरी में विश्व के सबसे ऊंचे जैतखाम देखकर भावविभोर हो गये । गुरू के सिद्धान्तों के सन्दर्भ में प्रा. पी. डी. सोनकर ने विस्तार पूर्वक बताया, प्रो. हीरेन्द्र ठाकुर ने प्राचीन नगरी शिवरीनारायण तथा खरौद की प्राचीनता पर प्रकाश डाले । समाजशास्त्र के प्रो. ललिता साहू द्वारा उस काल के समाज के संदर्भ में जानकारी दिया गई तथा गुरू के द्वारा नारी उत्थान के लिये किये गये कार्यों को रेखांकित किया। इतिहास के तह तक जानने एवं समझने के इस वृहद टीम में पवन कुमार, कुलेश्वर, लोमेश, हिरेन्द्र, भानु दुबे, डीगेश, पार्वती, अनिमा, तारा, पिंकी, तरूण, मोहन, गिरधर, अमित गणेश के साथ पूरे 118 छात्र/छात्राओं का दक्ष इतिहास से रूबरू हुए । छात्रा भानु दुबे ने कहा इस प्रकार से ऐतिहासिक स्थल पर अध्ययन-अध्यापन का कार्य इतिहास विभाग द्वारा सम्पन्न करवाना निरन्तर जारी है।

महिला अधिकार जागरूकता प्रतियोगिता

राष्ट्रीय महिला आयोग भारत सरकार के सौजन्य से प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह के निर्देशन में महिला उत्पीड़न निवारण एवं विकास समिति द्वारा महिलाओं से संबंधित विभिन्न अधिकारों की जानकारी देने हेतु दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी।

कार्यशाला के पश्चात दिनांक 17.11.2017 को महाविद्यालय परिसर में महिलाओं के विधिक अधिकारों के बारे में जागरूकता प्रतियोगिता (टैक्स सिरीज) में आयोजित की गयी, जिसमें महाविद्यालय के स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के लगभग 750 छात्र तथा छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु विद्यार्थियों में काफी उत्साह देखा गया। उक्त प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्रमश: 2,000 रूपये, 1,500 रूपये तथा 1,000 रूपये के पांच पुरस्कार विद्यार्थियों को राष्ट्रीय महिला आयोग भारत सरकार द्वारा पुरस्कार राशि प्रदान की जावेगी। प्रतियोगिता आयोजित कराने में डॉ. श्रीमती मीना प्रसाद, डॉ. श्रीमती अनिता साहा, प्रो. प्रीतिबाला टांक, प्रो. ललिता साहू, प्रो. कविता साकुरे डॉ. प्रियंका सिंह ने सहयोग प्रदान किया।

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

पं. दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन पर दो दिवसीय सेमीनार

राजनांदगांवः- चार विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की उपस्थिति में विगत 20-21 दिसंबर 2017 को महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की उपादेयता पर दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी संपन्न हुई। महाविद्यालय के स्वशासी प्रकोष्ठ द्वारा प्रयोजित और अर्थशास्त्र स्नातकोत्तर विभाग द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री खूबचंद पारख (बीस सूत्रीय कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति के प्रदेश उपाध्यक्ष) तथा राजनांदगांव के महापौर श्री मधुसुदन यादव जी अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे।

विशिष्ट अतिथि अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी वि.वि. के कुलपति प्रो. रामदेव भारद्वाज, रानी दुर्गावती वि.वि. जबलपुर के कुलपति प्रो. कपिलदेव मिश्रा, ए.पी.एस. वि.वि. रीवा के पूर्व कुलपति प्रो. ए.डी.एन. वाजपेयी एवं दुर्ग वि.वि. के कुलपति श्री एन.पी. दीक्षित सहित भोपाल के प्रतिष्ठित विचारक श्री प्रफुल्ल अकांत उपस्थित थे। प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने प्रस्ताविक स्वागत उद्बोधन दिया। संगोष्ठी की संयोजक डॉ. चन्द्रिका नाथवानी एवं आयोजन सचिव डॉ. डी.पी. कुर्रे ने कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए उसके उद्देश्य को स्पष्ट किया। उद्घाटन सत्र का प्रभावी संचालन डॉ. चन्द्रकुमार जैन ने किया।

उद्घाटन सत्र के आरंभ में सरस्वती पूजन एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण के उपरांत प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि पं. उपाध्याय के विचार भारतीय संस्कृति के उन्नयन के सिद्वांत पर आधारित हैं। समारोह के अध्यक्ष माननीय श्री मुधसूदन यादव ने अपने संबोधन में कहा कि पं. दीनदयाल का एकात्म दर्शन स्वच्छ राजनीतिक चिंतन की वकालत करता है जिसमें जाति और वर्गगत भेद के लिए कोई स्थान नहीं है।

चार कुलपतियों ने व्यक्त किये अपने विचार

मुख्य अतिथि माननीय श्री खुबचंद पारख ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के 52 वर्ष के जीवनकाल को संक्षेप में दर्शाते हुए स्थापित किया कि पं. दीनदयाल उपाध्याय किस प्रकार व्यक्ति विशेष से ऊपर उठकर अपने विचारों द्वारा आज भी हमारे बीच जीवित हैं। उनका अन्त्योदय दर्शन आज के भारतीय राष्ट्र चिंतन में प्रत्येक व्यक्ति के उत्थान के लिए योजना का रूप धारण कर लिया है।

डॉ. रामदेव भारद्वाज, कुलपति अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी वि.वि. भोपाल ने संगोष्ठी में आधार वक्तवय दिया। इसमें आपने पं. दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक और राजनीतिक दर्शन का सूत्र रूप में उल्लेख करते हुए बताया कि उनका सामाजिक दर्शन पंजीकृत व्यवस्था के अनुसार नहीं है। इसमें सम्पूर्ण मानव के विकास का भाव है। उनकी राष्ट्रीय संकल्पना में कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता जब तक वह अपनी जमीन से नहीं जुड़ा रहेगा क्योंकि भारत की सांस्कृतिक एकता समन्वय की भावना पर आधारित है।

तकनीकी सत्र के प्रथम वक्ता डॉ. ए.डी.एन. वाजपेयी (कुलपति शिमला) ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के वैचारिक दर्शन को अध्यात्मिक आधार पर समझाते हुए कहा कि इनके वैचारिक दर्शन में भारतीयता का मूल संदेश है। पं. दीनदयाल का एकात्म दर्शन व्यष्टि से समष्टि और फिर सृष्टि से परमेष्टि तक का दर्शन कराने वाला है।

डॉ. कपिल देव मिश्र (कुलपति जबलपुर वि.वि.) ने अपने वक्तय में कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचार आज शिक्षा जगत के लिए सबसे ज्यादा उपयोगी हैं। उपाध्याय जी के वैचारिक दर्शन में रूढ़ि का निषेध है उसमें परम्परा को युग धर्म के अनुसार जोड़ने से आधुनिकता निर्मित होती है। डॉ. केवलचंद जैन (पूर्व अध्यक्ष) सागर विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में अंतिम दिन डॉ. पूर्णेन्दु सक्सेना (वरिष्ठ चिकित्सक) रायपुर एवं केन्द्रीय वि.वि. बिलासपुर के डीन डॉ. पी.के. वाजपेयी सहित नागपुर से पधारे विचारक श्री दयाशंकर तिवारी विशेष अतिथि/वक्ता के रूप में उपस्थित थे। इस सत्र में विचारक दयाशंकर तिवारी ने उपाध्याय जी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर प्रभावी विचार व्यक्त किये। उन्होंने भारतीयता की नींव के रूप में संस्कृति को महत्वपूर्ण बताया। पुरूषोत्तम दास टंडन के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि किस प्रकार उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा न मिलने के कारण कांग्रेस से इस्तीफा दिया था।

डॉ. पूर्णेन्दु सक्सेना ने अपने वक्तव्य में कहा कि एकात्मवाद वस्तुत: उपाध्याय जी का 'वाद' नहीं मौलिक दर्शन है। भारत की विविधता में एकता की जो संस्कृति है, उसे पं. दीनदयाल उपाध्याय ने समन्वित किया है। मानव शरीर एकात्म का प्रतीक है। जैसे सम्पूर्ण अंग मिलकर शरीर का रूप धारण किये है, उसी प्रकार भारतीयता इसकी सांस्कृतिक विविधताओं से बनी है। डॉ. पी.के. वाजपेयी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन-दर्शन का विस्तार से उल्लेख किया और बताया कि आपका विचार सनातन परंपरा के साथ चलते हुए आज भी युगानुकूल है।

उल्लेखनीय है कि इस संगोष्ठी में कुल चार विश्वविद्यालयों के कुलपतियों सहित सामाजिक कार्यकर्त्ता, विचारक, प्राध्यापक एवं शोधार्थी न केवल सहभागी बने बल्कि अपने विचारों का आदान-प्रदान की किये। प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह एवं विभागाध्यक्ष डॉ. चंद्रिका नाथवानी के मार्गदर्शन संयोजन में विभागीय प्राध्यापक डॉ. डी.पी.कुर्रे, डॉ. श्रीमती सुमीता श्रीवास्तव, डॉ. महेश श्रीवास्तव, डॉ. मीना प्रसाद ने अपने व्यक्तिगत चिंतन के आयोजन को उत्कृष्ट बनाया।

महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा फाईनेंस द्वारा 89 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति वितरण

महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा फाईनेंस कंपनी लिमिटेड द्वारा महाविद्यालय के 73 स्नातक एवं 16 स्नातकोत्तर मेघावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इसमें उन छात्रों को सम्मिलित किया गया था, जिन्होंने अपनी परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। इसके अंन्तर्गत कंपनी के द्वारा बी.ए., बीएससी, बी.कॉम के विद्यार्थियों की अंतिम सूची तैयार की गई। कंपनी के सौजन्य से स्नातक के छात्र छात्राओं को 10,000/- रू. का एवं स्नातकोत्तर के छात्रों को 25 हजार रू का चेक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में कंपनी के एच.आर श्रीमती सोनल दीक्षित श्री आशुतोश भट्ट सहायक प्रबंधक एच. आर., श्री मनीष अभिजित कुमार सहायक प्रबंधक एच. आर. एवं श्री केशव हार्डिया एरिया मैनेजर उपस्थित थे।

प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह ने कहा कि महिन्द्रा फायनेंस का यह प्रयास सराहनीय है। ऐसे प्रयासों से छात्रों को लाभ होगा तथा वे छात्रवृत्ति का उपयोग अपने कैरियर निर्माण के लिये कर सकते हैं। सोनल दीक्षित ने अपने उद्बोधन में कहा कि कंपनी फाईनेंस करने के अलावा प्रतिभावान छात्रों के लिए और कुछ करना चाहती है। अत: ऐसे मेघावी छात्र जो आर्थिक संकट की वजह से पढ़ाई नही कर सकते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करना है।

छात्रा जान्हवी आचार्य, आस्था बोरकर और मोहन राजपूत , वेदप्रकाष, तामेश्वरी एवं नाजनीन ने अपने विचार रखते हुए कहा कि कंपनी का यह प्रयास सराहनीय है। इस प्रकार के छात्रवृत्ति हमें और उत्साह और ऊर्जा के साथ अध्ययन करने एवं भविष्य में समाज में एक अच्छा स्थान प्राप्त करने में सहायक होगी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजय ठिसके एवं आभार डॉ. शैलेन्द्र सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. के.एन. प्रसाद, डॉ. अनिता शंकर, एवं श्री रवि कुमार साहू तथा छात्र-छात्राओं के पालकगण उपस्थित थे। यह कार्यक्रम महाविद्यालय के आई.क्यू.एसी. एवं रोजगार एवं मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वाधान में संपन्न हुआ।

हिंदी विभाग/ विस्तार कार्यक्रम

कविता पोस्टर काव्य-शैली

विभागीय विस्तार कार्यक्रम के तहत स्थानीय बख्शी हाई स्कूल में स्नातकोत्तर छात्र-छात्राओं ने कविता पोस्टर लगाकर और काव्यपाठ कर स्कूली छात्राओं को काव्य-शैली का प्रशिक्षण दिया। इस कार्यक्रम में एम.ए. की छात्रा विजय लक्ष्मी, रिंकी साहू, उर्वशी, उषा किरण, नीलिमा, संतोषी, काजल पांडेय आदि ने स्कूली पाठ्यक्रम में संकलित कविताओं का सस्वर पाठ किया। छात्र मनीष कुमार ने बाबा नागार्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा है' का पाठ किया।

कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय सहित डॉ. चंद्र कुमार जैन, डॉ. बी. एन. जागृत, डॉ. नीलम तिवारी और श्री राम आशीष तिवारी भी काव्यपाठ कर कविता पढ़ने की शैली बताई।

बच्चन की पुण्य तिथि पर मधुशाला का पाठ: विभागीय छात्र-छात्राओं एवं प्राध्यापकों ने 18 जनवरी2018 को हरिवंश राय 'बच्चन' की पुण्य तिथि पर बख्शी स्कूल राजनांदगांव में 'मधुशाला' का सस्वर पाठ कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

सम्पादकीय

हीरक जयंती समारोहः ऐतिहासिक पल

समय ही समय का मानक है। सबसे बड़ा मानक। अपना मूल्यांकन वह स्वयं कर लेता है। बात को सहज ढंग से कहूं तो मेरा आशय यह है कि अतीत का मूल्यांकन भी उसकी कालावधि में ही की जाती है। किसी व्यक्ति या संस्था की उम्र ही ऐसे स्थाई आधार हैं जिनके सहारे उपलब्धियां आंकी जाती हैं। किन्तु विचारणीय यह है कि जहां व्यक्ति अपनी उम्र के साथ बूढ़ा होते जाता है, वहीं संस्थाएं अपनी अतीती कदम के साथ युवा होती हैं। इस अर्थ में दिग्विजय महाविद्यालय ने अपनी उम्र के साठ साल पूरे कर उसे हीरक जयंती का रूप दिया है। समय को पीछे छोड़कर आगे बढ़ना ही विकास है।

पूरे साठ वर्षो का सफर पूरा करने के बाद खुशी का जश्न इस वर्ष (2018) के 14-15 फरवरी को मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की उपलब्धियां उत्सव के रूप में नजर आईं। महाविद्यालय के पहले सत्र के विद्यार्थियों ने अपने महाविद्यालयी जीवन के अनुभव के साथ महाविद्यालय परिसर में दो दिवसीय जश्न को अंजाम दिया। साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ही पूर्व विद्यार्थियों ने विचार सत्र में इस संस्था के इतिहास को भी उजागर किया। उल्लेखनीय सिर्फ यही नहीं है कि इस संस्था की संस्कारी मिट्टी ने इस अवधि में कितने आइएएस, आइपीएस, डॉक्टर, इंजीनियर, न्यायाधीश, प्राध्यापक, साहित्यकार, व्यवसायी, राजनेता, कलाकार और पत्रकार, चित्रकार की सजीव मूर्ति गढ़ी है। उल्लेखनीय तो यह भी है कि कितने ऐसे इंसानों को यहां गढा गया है जो अपने कर्मो से अपने को मनुष्य होना प्रमाणित कर रहे हैं।

हीरक जयंती समारोह के दो दिवसीय आयोजन में संस्था के प्राचीन विद्यार्थियों का उत्साह न सिर्फ देखने लायक बल्कि प्रेरणादायी भी था। अपने विद्यामंदिर की मिट्टी से ऐसा लगाव कि देश के कोने-कोने से आनेवाले एलुमनी ने भौगोलिक दूरियों की सीमा को पाट दिया। नृत्य-गीत और नाट्याभिनय की कला के साथ दो दिनों का ऐतिहासिक आनन्द हमेशा-हमेशा के लिए यादगार बन गया। प्रदेश के मुखिया माननीय मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी के मुख्य आतिथ्य और युवा सांसद माननीय श्री अभिषेक सिंह जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ यह हीरक जयंती उत्सव भौतिक संसाधनों के उपहार से भी संवर गया। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जब 1.40 करोड़ के अध्यापन भवन, 53 लाख के सौर संयंत्र और 45 लाख के हीरक जयंती उद्यान सहित 5.46 करोड़ के बालक एवं बालिका छात्रावास तथा 45 लाख की लागत से बनने वाले विवेकानंद सभागार का भूमिपूजन भी किया तो महाविद्यालय परिसर तालियों की गड़गड़ाहट से गुंज उठा।

सम्मान एक सामाजिक व्यवस्था है। किन्तु दुनिया में एक शिक्षण संस्था ही वह केन्द्र है जहां विद्यार्थी को अपने शिक्षकों द्वारा सम्मानित किया जाता है। सच पूछा जाए तो यह ऐसा क्षण होता है जहां ऐसे अवसर पर अपने विद्यार्थियों से भी अधिक प्रसन्नता स्वयं शिक्षकों को होती है। ऐसे ही पल इस आयोजन में तब आया जब अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी श्री मृणाल चौबे, पद्मश्री डॉ. पुखराज बाफना सहित कई होनहार हीरक जयंती के ऐतिहासिक मंच पर संस्था द्वारा सम्मानित हुए। महाविद्यालय के प्राध्यापकों द्वारा लिखित और संपादित कुल चार पुस्तकों के विमोचन सहित महाविद्यालय के इतिहास पर आधारित टेली फिल्म का लोकार्पण भी इस समारोह के गौरवशाली पल में शामिल हुआ।

छत्तीसगढ़ में कृषि: दशा एवं दिशा

- अनिल कुमार (एम.ए. अर्थशास्त्र) -

भारत प्रारम्भ से ही कृषि प्रधान देश रहा है। ग्रामीण भारत की जनसंख्या का बड़ा भाग कृषि कार्य पर आश्रित है। प्राथमिक कार्य के रूप में भारत के गांवो के लोगों का जीवन कृषि पर ही निर्भर है। देश की राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान अन्य क्षेत्रो की अपेक्षा अधिक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की कृषि पिछड़ी हुई दशा में थी। उस समय खाद्यान्न के लिये भारत को विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता था। इसके साथ ही यदि कृषि पर कीट प्रकोप का प्रभाव पड़े तो इससे फसल का बड़ा भाग नष्ट हो जाता था। कृषि पूर्णतः परम्परागत तरीके से की जाती थी। इन सबके कारण भारत में कृषि उत्पादकता बहुत कम थी।

भारत में कृषि क्षेत्र की उन्नति पर हरित-क्रांति का प्रभाव पड़ा है। हरित क्रांति के कारण उन्नत कोटि के बीज, खाद का उपयोग कृषकों ने किया। सिंचाई के लिये विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं से लाभ प्राप्त हुआ है। साथ ही अब परम्परा हल के स्थान पर ट्रेक्टर का उपयोग बढ़ा है। इन सबके बाद भी आज भारत के कुछ राज्य पिछड़े हुए हैं जहां कृषि की उन्नति विकसित राज्यों की तुलना में कम हुई है। अतः यह आवश्यक है कि इन क्षेत्रो में शिक्षा व प्रशिक्षण का विस्तार कर कृषकों को उन्नत कृषि तकनीक के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है। तभी सभी राज्यों की कृषि उन्नति समरूपता प्राप्त कर रही है।

छत्तीसगढ़ की स्थिति देश की औसत स्थिति से भिन्न नही हो सकती। छत्तीसगढ़ को वर्तमान में पूर्णतः कृषि पर निर्भर प्रदेश कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी। यहां कृषि पद्धति परम्परागत तथा लगभग मानसून पर निर्भर है। अर्थात् मानसून की कृपा हुई तो अच्छा उत्पादन तथा वर्ष भर की खुशहाली अन्यथा अनावृष्टि की स्थिति में अकाल, आर्थिक दुर्दशा, भुखमरी एवं पलायन जैसे अभिशाप ग्रामीण कृषकों के भाग्य बन जाते हैं। साथ ही अतिवृष्टि भी इन ऐसी स्थितियां निर्मित करती है। छत्तीसगढ़ में सिंचाई की उपलब्ध सुविधाएं अपर्याप्त है, प्रदेश में एक मानसूनी फसल वह भी मुख्यतः चांवल की ली जाती है, शायद यही कारण है इसे धान का कटोरा कहा जाता है, यहां कृषि में सर्वाधिक धान की फसल लगभग (67.46 प्रतिशत) ली जाती है। छ.ग में कृषि क्षेत्र का प्रादेशिक वितरण असमान है, कृषि भूमि का उपयोग तथा उत्पादन एवं जलवायु की दृष्टि से संपूर्ण प्रदेश को मुख्यतः तीन कृषि जलवायु क्षेत्रो में विभाजित किया जा सकता है।

उरी पहाड़ी क्षेत्र:- यह ऐसा क्षेत्र है जहा औसत निरा, बोया गया क्षेत्र कुल भूमि का एक तिहाई अथवा उससे भी कम है। कुछ भागो में तो यह 20 प्रतिशत के लगभग है, स्पष्ट है कि पठारी एवं पहाड़ी वन के कारण यहां कृषि की वर्तमान में कम संभावनाएं है, अधिकांश भाग पर छिछली, कंकरीली, पथरीली, लाल पीली मिट्टी पायी जाती है, जिसमें पोषक तत्वों की कमी होती है, ऐसी भौतिक दशाओं में कृषि कार्य कठिन हो जात है।

फसलें:- चांवल, ज्वार, मक्का, गेंहू, जौ, दलहन में तिलहन में, मूंगफली, तिल, अलसी तथा अन्य नगदी फसलो में गन्ना, फल, सब्जी एवं मिर्च मसालें आदि है।

मैदानी क्षेत्र:- यह समतल क्षेत्र है यहां भूमि का ढाल कम है एवं यहां की लाल-पीली व काली मिट्टी अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ है। ढाल कम होने से न केवल कृषि कार्य में सरलता होती है बल्कि, यातायात के साथ विकास भी अधिक हो सका है।

बस्तर का पठार:- बघेलखण्ड की तरह यहां भी पहाड़ी पठारी क्षेत्र होने तथा सघन वनों से अच्छादित होने के कारण कृषि कार्य कठिन है, यहां की मिट्टी लाल-रेतीली है जिसकी उर्वरता कम है, सिंचाई की अल्प सुविधा एवं निम्न कृषि कार्य के कारण यह क्षेत्र अत्यंत पिछड़ा हुआ है। यहां अधिकांश मोटे अनाज ही पैदा किए जाते हैं।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति की लगभग आधी जनसंख्या वाले इस प्रदेश में कृषि क्षेत्र का पिछड़ा होना अत्यंत गंभीर विषय है, प्रदेश में अधिकतर मध्यम एवं सीमान्त कृषक है जो बस्तर में 12 प्रतिशत से रायपुर में 30 प्रतिशत तक है, अतः सिंचाई की उपलब्ध सुविधाओं का भी लाभ नही मिलता है, पशु संख्या क्षेत्र में अत्याधिक है। इनके कुछ कृषिगत उपयोग के अलावा दूध का उत्पादन न्यून है, गरीबी के कारण कृषक कृषि के आधुनिक व वैज्ञानिक पहलुओं से कोसो दूर है, परिणामतः यहां के कृषक उन्नत पद्धति से कृषि कार्य नही करते है। जिससे खरीफमें केवल धान एवं रबी में अंतरा के अलावा वर्ष भर फसल नही ली जाती है। अधिकांश प्रदेश एक फसली क्षेत्र ही है, भूमिहीन मजदूर एवं सीमांत कृषक तथा एक हेक्टेयर से कम भूमि वाले कृषक फसल की कटाई के बाद रोजगार की तलाश में दूसरे राज्य में पलायन कर जाते है, इससे न

केवल इनका परिवार अव्यवस्थित रहता है, बल्कि इनके बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते है।

छत्तीसगढ़ में कृषि के पिछड़ेपन के मूलभूत कारण इस प्रकार है-

वर्षा की अनिश्चितता - वर्षा की अनिश्चितता मूलतः प्रकृति जन्य समस्या है भारतीय कृषि विशेषकर खरीफ फसलें मानसूनी वर्षा पर निर्भर है मानसून के आने तथा लौटने में अनिश्चितता रहती है। रबी की फसल पर मौसम दशाओं का बहुत प्रभाव पड़ता है।

सिंचाई के साधनों की अपर्याप्तता:- कृषि मुख्यतः मानसून पर आश्रित है जब कभी मानसूनी वर्षा नहीं हो पाती तब राज्य के अधिकांश क्षेत्रो में सूखे की स्थिति निर्मित हो जाती है। जहां कहीं सिंचाई की सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती है, वहीं फसलो का उत्पादन होता है। प्रदेश में सिंचाई के साधनों की कमी है।

जोत का छोटा आकार:- कृषि के समक्ष एक प्रमुख समस्या यह है कि अधिकांश किसानों के जोत (खेत) का आकार बहुत छोटा है। भारत में जोत के औसत आकार 2 हेक्टेयर से कम है, जबकि यह औसत न्यूजीलैण्ड में 184, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका 58, और ब्रिटेन में 24.5 है। जोत का आकार छोटा होने का प्रमुख कारण बढ़ती हुई जनसंख्या तथा पैतृक संपश्रि में बटवारे की प्रथा है।

किसानो में गरीबी व अशिक्षा:- कृषि के समक्ष सबसे गम्भीर समस्या कृषको की गरीबी एवं अशिक्षा है। देश में अधिकांश कृषको के पास आधुनिक कृषि के लिए विनियोग क्षमता, उन्नत बीज, सिंचाई की सुविधा, उर्वरक, यंत्र एवं रासायनिक दवाइयों की कमी है ये कृषक खेत में किसी प्रकार बीज डाल देते है तथा साधारण निराई-गुड़ाई के पश्चात् जो भी उपज मिल जाये, उसी से संतोष कर लेते है। यदि किसी तरह उपर्युक्त साधन उपलब्ध हो जाये तो कृषक शिक्षा के अभाव में इन साधनो का समुचित उपयोग नही कर पाते, फलस्वरूप उत्पादन अत्यंत कम होता है।

ग्रामीण ऋणग्रस्तता:- प्रदेश के गांवों में गरीब कृषक सदैव ऋण में फंसा रहा है। उसके खेतो से इतना उत्पादन नही प्राप्त होता कि अपनी जरूरत की सारी चीजे हासिल कर सके। अतः कृषि आदानों के साथ-साथ अन्य जरूरतों के लिए अकसर ऋण की जरूरत पड़ जाती हैं। चूंकि भारत में बैंकिग व्यवस्था काफी पिछड़ी हुई है, अतः किसानो को समय पर धन नही उपलब्ध हो पाता। साथ ही ये संस्थाएं सिर्फ उत्पादक कार्यो के लिए ही ऋण देती है, जबकि कृषको को अन्य अनुत्पादक ऋण की आवश्यकता होती है। अतः इन कृषको के पास स्थानीय महाजनों की शरण में जाने के अलावा कोई चारा नही होता।

कृषि उत्पादन की पुरानी तकनीक:- भारत के अधिकांश कृषक अपनी भूमि पर परम्परागत् तरीके से ही खेती करते है। उसके पास इतने साधन नही होते कि वह उन्नत तकनीक को अपना सके। अतः हल, बैल, गोबर की खाद, घटिया बीज आदि की सहायता से ही खेती करते हैं। फलस्वरूप कृषि में उत्पादकता बहुत कम होती है यदि कृषक नवीन तकनीक को अपना ले तो निश्चित रूप से उत्पादन में क्रांतिकारी वृद्धि होगी। हरित क्रांति के दौरान पंजाब, हरियाणा, आदि के कृषको ने इस बात को सच कर दिखाया है। इसलिए कहा जाता है कि अभी भारत में कृषि उत्पादन को बढ़ाने की और संभावनाएं है।

जोतो का अनार्थिक आकार:- भारत की जनसंख्या की विशालता भूमि पर जन दबाव को बढ़ा देती है साथ ही भारत में भूमि के स्वामित्व के कानून ऐसे है कि खेत का आकार बहुत छोटा और अनार्थिक हो जाता है जिस पर आधुनिक तरीकें से खेती करना कठिन हो जाता है।

अन्य समस्याएँ:- उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त कुछ और भी समस्याएँ भारतीय कृषि के समक्ष विद्यमान है, जिनमें पशुओं की दयनीय दशा, पूंजी की अपर्याप्तता, भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास साख सुविधाओ का आभाव, सामाजिक कुरीतियाँ राजनीतिक कारण, विक्रय व्यवसाय का ठीक न होना आदि है। कृषि की उन्नति तथा विकास हेतु मुख्य सुझाव इस प्रकार है -

सुझावः-

- पड़त भूमि का प्रभावी उपयोग एवं भूमि उपयोग दर में वृद्धि करना।
- कृषि अनुसंधान व नई तकनीक कृषको तक पहुंचाने हेतु तंत्र का विकास।
- केवल उच्च गुणवत्ता के बीजों का ही प्रयोग सुनिश्चित करना।
- कार्बनिक एवं जैव उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देना।
- संसाधनो के उपयोग एवं राजस्व अर्जन की व्यवस्था करना।कृषक प्रशिक्षण की सरल पद्धति का विकास विशेषतः पड़त भूमि विकास कृषि वानिकी, जल उपयोग, संचित जल का प्रबंध, फसल सुरक्षा, बीजारोपचार, उर्वरक आयोग आदि।
- सूखे की स्थिति से निपटने हेतु विशेष कार्ययोजना की जानी चाहिए ताकि पलायन को रोका जा सके। रोजगारोन्मुख व्यवहारिक एवं उपयोगी आपदा राहत कार्य चलने चाहिए, जिससे विकास कार्य भी हो व सूखा पीडितों को राहत मिल सकें।

छत्तीसगढ़ के पृथक राज्य बनने के बाद से सरकार द्वारा कृषकों को अनेक सुविधायें दी गई हैं। समय-समय पर कम ब्याज पर ऋण देना, आवश्यकता के समय राहत देना इत्यादि। इसके साथ ही किसान क्रेडिट कार्ड योजना बजट में कृषि को विशेष स्थान देना यह स्पष्ट करता है कि इस राज्य में कृषि तथा कृषकों के विकास के प्रति सरकार प्रतिबद्ध है। गाँवों में सड़कों के विस्तार तथा बिजली सुविधा बढ़ने का प्रभाव भी कृषि की उन्नति पर देखा जा सकता है।

REPORT ON EDUCATIONAL VISIT

AT SOAP FACTORY RANITARAI RJN

_ kanchan sahu _

The M.Sc. students of Chemistry Department Govt. Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon (C.G.) were sent for an internship program to a Soap factory located at Ranitarai Rajnandgaon (C.G.).There we learnt about the raw materials and machines used for making soap and also got acknowledged with the procces.In this factory they used some raw materials as-Soap noodles,soap stone powder,EDTA(as water softener),sles(as foaming agent),color reagents,perfumes etc.

There were many machines used for making soap. These are-Sigma mixture machine, Triple roller ,Twine plouder, Bar cutter, Stumping machine, Wrapping machine and Air compressor etc.In the process of soap preparation they first

mixed all raw materials in sigma mixture. Here the mixture be heated so it pass into the triple roller in which temperature is approx 0 to 12°C.Then this mixture passes into the twin plouder machine and then vacuum chamber in which the temperature is 70°C.in this way the mixture of raw materials becomes solid and is ready for a perfect shape. This solid form of mixture is passed into the bar cutter and then passed through the stumping machine.Finaly it is passed through the wrapping machine for wrapping.

In this way we learnt about the process and required materials for making soap in soap factory Ranitarai Ranandgaon (C.G.).

Name of students who participated in this program is as under- kanchan, deenbandhu, yogesh kumar, kuleshwar sahu, ramlal sori, Salini Thakur and Angeshwar Nirmalkar.

A POEM

My PAPA

(By Sunil Shyam Lal)

My papa worked bitterly hard
But he never got us involved
He wished only us to be good heart
Nothing except this he thought.
Cycled daily for six to eight hours
Wondered village to village to sell things for us
By the evening got back home tired
After getting used to ask for needs to be hired
Always invoked us to study
Though he couldn't pursue his own study
I lucky to be son of the god spirit
I love my papa and wish to be always under his feet
How a pious heart he has !
Can't see any one under the Satan's bless
Always ready to help to needy
Even they may be some of cruelty
I love my father from the bottom of my heart
Can never alive from being depart
Dreams are to be turned into reality
Which my papa saw that can make him happy... I

LOVE MY PAPA

प्राचार्य ने दी बधाई....

डॉ आर.एन. सिंह

डॉ. राय के निर्देशन में दो पीएच. डी. एवार्ड

महाविद्यायल के हिंदी शोध केन्द्र में शोधरत छात्र श्री प्रवीण कुमार साहू और छात्रा सुनीता सोनी को पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर ने पीएच.डी. उपाधि प्रदान की है। इन दोनो ने विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूरा किया है। प्रवीण साहू के शोध का विषय था-``कबीर की साखियों में समसामयिकता एवं प्रासंगिकता का अध्ययन।'' सुनीता का विषय था-``छत्तीसगढ़ में डंडागीत परंपरा और उसका स्वरूप।''

डॉ जैन को एक और उपाधि

हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. चंद्रकुमार जैन ने महात्मा गांधी के जीवन-दर्शन पर आधारित एमए की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। यह परीक्षा आप ने इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय मुक्त विश्व-विद्यालय नई दिल्ली से दी थी। उल्लेखनीय है कि इससे पहले आपने हिंदी सहित अंग्रेजी, समाजशास्त्र, दर्शन शास्त्र और लोक प्रशासन विषयों में भी एमए की उपाधि प्राप्त की है।

राम आशीष तिवारी को पीएच.डी

हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक राम आशीष तिवारी को काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा हिंदी विषय में पीएच-डी की उपाधि प्रदान की गई। इन्होंने बीएचयू के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अशोक सिंह के नेतृत्व में अज्ञेय के कथा साहित्य पर अपना शोधप्रबंध तैयार किया है।

डॉ. शैलेन्द्र सिंह को मतदाता जागरुकता पुरस्कार

इतिहास विभाग के डॉ. शैलेन्द्र सिंह को राजनांदगांव जिला प्रशासन की ओर से मतदाता जागरुकता अभियान में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया गया। इसके तहत उन्हें 7000/ की नगद राशि सहित प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

संस्कृत के तीन विद्यार्थी सेट में उर्तीण

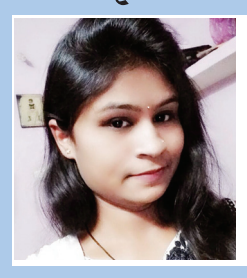

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के तीन विद्यार्थी कुमारी डालेश्वरी साहू, पूजा चौधरी और फागेश्वर साहू को पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर द्वारा आयोजित राज्य प्राध्यापक पात्रता परीक्षा में सफलता हासिल हुई है।

अतिथि व्याख्यान

विशेषज्ञ द्वारा प्रेरक व्याख्यान

इतिहास विभाग में प्रथम व्याख्यान माला में डॉ. आर.एन. विश्वकर्मा पूर्व प्राध्यापक इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ ने ''सिंधुघाटी की सभ्यता'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. विश्वकर्मा ने कहा कि सभ्यता बाहय परिवेश है जबकि संस्कृति आंतरिक परिवेश, सिंधु सभ्यता ने भारतीय संस्कृति को विश्व में पहचान दिलाई थी । दूसरा व्याख्यान माला प्रतियोगि परीक्षाओं में सफलता कैसे प्राप्त करे विषय पर आयोजित की गई । जिसमें छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाला सुश्री अर्चना पाण्डेय एवं डी.एस.पी. पद पर चयनित गिरिजा षंकर साव ने प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के महत्वपूर्ण टिप्स विद्यार्थियों को दिए।

तीसरा व्याख्यान ''सुरता राजनांदगांव के राजा'' विषय पर आयोजित की गई जिसके मुख्यवक्ता बख्शी सृजन पीठ के अध्यक्ष डॉ. रमेन्द्र नाथ मिश्र थे, इन्होने राजनांदगांव के राजाओं के कार्यो की जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान की । चौथा व्याख्यान ''पर्यटन का इतिहास'' विषय पर आयोजित की गई । मुख्यवक्ता डॉ. शम्पा चौबे प्राध्यापक, शासकीय दुधाधारी बजरंग कन्या महाविद्यालय, रायपुर थी । डॉ. चौबे ने पर्यटन के इतिहास की जानकारी देते हुए बताया कि किस प्रकार से वर्तमान के पर्यटन एक उद्योग के रुप में विकसित हो रहा है । सारे व्याख्यान माला का संचालन डॉ. शैलेन्द्र सिंह एवं आभार प्रो. हीरेन्द्र ठाकुर द्वारा किया गया। विभाग में छात्र-छात्राओं को नेट-स्लेट की परीक्षा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के बारे में निरंतर जानकारी वर्ष भर प्रदान की जाती है ।

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली कु. अर्चना पाण्डेय एवं डी.एस.पी. पद पर चयनित गिरिजा शंकर साव का व्याख्यान एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। प्रारंभ में डॉ. शैलेन्द्र सिंह द्वारा व्याख्यान की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया कि प्रशासनिक पदों पर चयनित विद्यार्थियों का व्याख्यान सुनकर छात्र-छात्राएं अधिक लाभान्वित होंगे। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने कहा कि महाविद्यालय का हमेशा से यह प्रयास रहा है कि ऐसे आयोजन किये जाएं जिनमें विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता की प्रेरणा मिलती रहे। श्री गिरिजा शंकर साव ने कहा कि परीक्षा में सफलता के लिए विषय का चुनाव सबसे महत्वपूर्ण होता है, साथ ही उन्होंने कहा कि अच्छी हैंड राईटिंग भी आपको अच्छे अंक दिलाने में सहायक होती है। कु. अर्चना पाण्डेय ने कहा कि लक्ष्य निर्धारण के साथ-साथ अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़े उससे आपको लाभ होगा। हिन्दी माध्यम या अंग्रेजी माध्यम का कोई फर्क नही पड़ता, आपकी अभिव्यक्ति ही आपका आइना होता है।

इस अवसर पर अर्चना पाण्डेय के पिता श्री सुरेश पाण्डेय, माता श्रीमती ममता पाण्डेय, प्रो. एच.एस. अलरेजा, प्रो. ललिता साहू, प्रो. संजय सप्तऋषि, प्रो. हीरेन्द्र ठाकुर, तथा महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शैलेन्द्र सिंह तथा आभार प्रो. हीरेन्द्र ठाकुर द्वारा किया गया।

मानवाधिकार पर व्याख्यान

मानवाधिकार दिवस के संबंध में शासन के निर्देशानुसार प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह द्वारा महाविद्यालय के समस्त छात्र / छात्राओं एवं कर्मचारियों को मानवाधिकार की शपथ दिलाई गयी। इसी क्रम में राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान में व्यवहार न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक प्राधिकरण अंजली सिंह एवं महिला संरक्षण अधिकारी विद्या मिश्रा के द्वारा महिला अधिकारों के बारे में विषद जानकारी दी गई । विद्या मिश्रा ने मानवों को प्राप्त अधिकारों जैसे जीवन स्वतंत्रता विचार एवं अभिव्यक्ति के अधिकारों के बारे में जानकारी दी । उन्होंने घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 के अन्तर्गत महिलाओं को प्राप्त विधिक अधिकारों के बारे में बताते हुए कहा कि घरेलू हिंसा में शारीरिक मानसिक मौखिक भावनात्मक लैंगिक तथा आर्थिक हिंसा शामिल हैं । वर्तमान में समाज में व्यापक बदलाव हुये हैं परन्तु महिलाओं एवं लड़कियों के प्रति नजरीयें में बदलाव न आने के कारण महिला हिंसा में बढ़ोत्तरी हुई है इसके लिये सरकार द्वारा विभिन्न नियम और कानून के द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया है। इनमें से घरेलू हिंसा अधिनियम एक है जिसके तहत् महिला को भरण-पोषण आश्रय चिकित्सा अभिरक्षा प्रतिकर आदि के अधिकार प्राप्त है।

प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने शिक्षा के अधिकार के बारे में बताया कि छात्रों को शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के समय जो आश्वासन इनके द्वारा दिया गया था यदि संस्थाएं इन्हें पूरा न कर पाये तो ये छात्र/छात्राओं के शिक्षा के अधिकार का उल्लंघन माना जायेगा। कॉलेज में कक्षा का संचालन नियमित रूप से न होना, स्वच्छ पीने का पानी न होना आदि शामिल है। उन्होंने आगे बताया कि अधिकार के साथ जुड़े हुये कर्तव्य ज्यादा महत्वपूर्ण हो यदि समाज में व्यक्ति अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का निर्वहन ईमानदारी से करता है तो लोग अधिकारों के प्रति ज्यादा सजग होंगे तथा तभी इन अधिकारों का वास्तविक प्रयोग किया जा सकता है।

व्यवहार न्यायाधीश एवं जिला विधिक प्राधिकरण सचिव अंजली सिंह ने बताया कि मानव के रूप में जन्में व्यक्ति की गरीमा का संरक्षण तभी हो सकता है जब हम अधिकारों के साथ ही साथ अपने दायित्वों को भलीं प्रकार से समझें। उन्होंने मानव अधिकारों को स्वच्छ पर्यावरण के अधिकार के साथ जोड़ा और ये कहा कि गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिये स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार आवश्यक है। साथ ही उन्होंने स्वास्थ्य का अधिकार महिलाओं के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार का अधिकार, बच्चों के अधिकार के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. अमिता बक्शी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ. अंजना ठाकुर ने किया । इस मौके पर विभाग के अध्यापकगण श्री डी. सुरेश बाबु, संजय सप्तर्षी साथ ही बहुत संख्या में छात्र / छात्राएं उपस्थित रहे ।

कैरियर गाइडेन्स पर व्याख्यान

समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग में सागर केन्द्रिय विश्वविद्यालय से आये समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभागाध्यक्ष डॉ दिवाकर सिंह राजपूत द्वारा कैरियर गाइडेन्स पर अतिथि व्याख्यान दिया गया। उन्होंने सर्वप्रथम समाजशास्त्र विषय को सर्वाधिक महत्वपूर्ण निरूपित किया। उन्होने कहा कि पहला समाजशास्त्र, दूसरा गणित तीसरा चिकित्सा इन तीनो विषयो को हटा दें तो मानव जगत समाप्त हो जाएगा

समाजशास्त्र मानवीय व्यवस्था का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। यदि यह न हो तो विश्व के सारे आविष्कार निरर्थक हो जाएंगे। संबंधों का ज्ञान न हो तो विश्व में पागल राज्य स्थापित हो जाएगा। व्याख्यान समाप्ति के पश्चात् छात्रों द्वारा अनेक प्रश्न पूछे गये जिसका संन्तुष्टिपूर्ण उत्तर पाकर छात्र उत्साहित हुए। कार्यक्रम के अंत मे बी. एल. कश्यप, एवं मंडावी सर द्वारा सभी व्याख्यान को पूर्ण रूप से आत्म सात करने के लिए सभी छात्रो को प्रेरित किया गया।

परिषद् का उद्घाटन एवं व्याख्यान

महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह के निर्देशन एवं विभागाध्यक्ष डॉ. अंजना ठाकुर के मार्गदर्शन में राजनीति विज्ञान परिषद् का उद्घाटन एवं विशेष व्याख्यान वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत-चीन सम्बंध पर आयोजित किया गया। इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ डॉ. संगीता घई प्राध्यापक डागा महाविद्यालय रायपुर उपस्थित थे।

सर्वप्रथम विभागाध्यक्ष डॉ. अंजना ठाकुर ने स्वागत परिचय दिया तथा परिषद् का उद्घाटन किया। राजनीति विज्ञान परिषद् का गठन छात्रों के पूर्व कक्षाओं में प्राप्त अंकों के गुणानुक्रम के आधार पर किया गया। इस क्रम में अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार, उपाध्यक्ष कु. दिपिका, सचिव लोकेश्वरी वर्मा और सहसचिव कु. शालिनी चुनी गई। कोषाध्यक्ष प्रीति साहू एवं प्रचार प्रसार तथा आयोजन समीति सदस्यों के रूप में छात्र-छात्राओं का मनोनयन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ ने छात्रों को शुभकामनाएं देते हुए शैक्षणिक गुणवत्ता के साथ समाज तथा राष्ट्र निर्माण में योगदान में भूमिका सुनिश्चित करने का आग्रह किया। इस अवसर पर विभाग के सभी प्राध्यापक एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र छात्राएं उपस्थिति थे।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञ द्वारा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत-चीन सम्बन्ध के बारे में बताया कि स्वतंत्रता के शुरुआती दौर में भारत-चीन सम्बंधों की शुरूआत मधुरता एवं मित्रतापूर्वक हुई थी। परंतु 1960 के दशक में तिब्बत एवं सीमा विवाद के मुद्दे के चलते, पंचशील समझौते का कटुता एवं शत्रुता में परिवर्तन हुआ । वर्तमान में दोनों देशों के मध्य विवाद का प्रमुख मुद्दा डोकलाम (जिसे चीन में डोकलाम कहा जाता है) का है, जहाँ चीन सडक बना रहा है, यह वही जगह है जो भारत के उत्तर पूर्वी राज्य सिक्किम के पास स्थित है। चीन द्वारा सडक बनाने की मंशा यह जाहिर करती है कि वह भूटान को ढाल बना कर भारत की संप्रभुता को आघात पहुँचा सकता है। साथ ही साथ दोनों देश एक दूसरे के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय मंच पर दूसरे देशों का सहयोग लेते हैं। इस प्रकार यह देखने को मिलता है कि दोनों देश वर्तमान समय में एशिया पर वर्चस्व कायम करने के लिये लगे हुए है ।

'सात केडेट्स दिल्ली के लिये चयनित'

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव के एन. सी. सी. इकाई के केडेट आर.डी.सी. से सलेक्शन कैम्प होशंगाबाद से लौटे सीनीयर अण्डर आफीसर काशीराम सीनीयर अण्डर ऑफिसर किरन वर्मा तथा सार्जेन्ट खिलेश्वरी का चयन भी आर. डी. सी. दिल्ली के डिकेन्ट प्रथम के लिये हुआ है । केडेट्स के लौट आने पर एन.सी.सी. अधिकारी केप्टन पी. डी. सोनकर, मेजर किरन दामले तथा राजू खुटे ने केडेट्स को बधाई दी ।

युवा उत्सव क्रिज में मॉडेल कॉलेज विजेता

युवा उत्सव 2017 के अंतर्गत दुर्ग विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित क्रिज स्पर्द्धा का आयोजन शासकीय व्ही.या.टी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में 13 टीमों ने भाग लिया था। प्रारंभ में प्रतिभागियों के बीच लिखित परीक्षा ली गई जिसमें 6 टीमों ने फाइनल राउण्ड में प्रवेश किया। फाइनल राउण्ड में मॉडल कालेज राजनांदगांव के नवजोत भाटिया एवं कन्हैया वर्मा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विजेता बनने का गौरव हासिल किया।

पूरे प्रतियोगिता में दोनो ने 150 अंक अर्जित किये। प्रतियोगिता के विजेता नवजोत भाटिया, कन्हैया वर्मा एवं चन्द्रभान नांदेश्वर सेट्रल जोन प्रतियोगिता में दुर्ग विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करेंगे। सेट्रल जोन प्रतियोगिता बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल द्वारा 3 नवंबर से 7 नवंबर तक आयोजित की जा रही है। छात्रों को इस उपलब्धि पर जनभागीदारी समित अध्यक्ष श्री मधुसुदन यादव, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह एवं महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों ने बधाई दी।

शैक्षणिक भ्रमण- डोंगरगढ़ जिला- राजनांदगांव

दिनांक 28.02.2018 को प्राचार्य डॉ. आर.एन.सिंह जी के मार्गदर्शन में स्नातकोत्तर द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के लगभग 17 विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक भ्रमण हेतु विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे एवं सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य के साथ डोंगरगढ़ हेतु प्रात: 9.00 बजे प्रस्थान किया गया। प्रस्थान से पूर्व महाविद्यालय परिसर स्थित देवालयों में जाकर पूजार्चन किया गया एवं इस प्रकार मंगलारम्भे की परम्परा का निर्वहन भी किया गया।

शोध प्रविधि कार्यशाला

दिनांक 24.01.2018 एवं 25.01.2018 को संस्कृत विभाग में विद्यार्थियों को शोध की ओर प्रेरित करने हेतु शोध प्रविधि कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संस्कृत विभाग के साथ हिन्दी एवं पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों में भी सहभागिता की। इस कार्यशाला में स्रोत पुरूष ;त्मेवनतबम च्मतेवद) के रूप में हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शंकरमुनि राय उपस्थित हुए। उन्होनें विद्यार्थियों को पी.एच.डी. प्रक्रिया एवं शोध पत्र से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान की।

स्वच्छता ऐप्प पर कार्यशाला

प्राचार्य डॉ. आर.एन.सिंह के निर्देशन में महाविद्यालय के ई क्लास रूम में भारत सरकार के स्वच्छता अभियान को बढ़ावा हेतु बनाये गए स्वच्छता ऐप्प के उपयोग हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में नगर निगम राजनांदगाव से आए प्रोग्रामर श्री पंकज चंद्रवंशी ने बताया कि इस स्वच्छता ऐप्प को अपने स्मार्ट फोन पर गूगल प्ले स्टोर से आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है। इसे इनस्टॉल करने के बाद अपने मोबाइल नंबर के द्वारा वन टाइम पासवर्ड से रजिस्टर्ड करना होता है। इसके पश्चात् प्रोफाइल में अपना नाम चेंज करना होगा। इस स्वच्छता ऐप्प के द्वारा संभावित गंदगी का फोटो सीधे अपलोड किया जा सकता है। गन्दगी वाली जगह का फोटो लोकेशन के साथ सीधे सम्बंधित विभाग के सर्वर पर अपलोड हो जायेगा तथा विभाग उस अपलोड जानकारी के आधार पर आगे कार्यवाही करेगी । श्री पंकज चंद्रवंशी ने महाविद्यालय के छात्र- छात्रों के स्मार्ट फोन पर स्वच्छता ऐप्प डाउनलोड करके भी दिखाया तथा 40 छात्र- छात्रों का रजिस्ट्रेशन भी कराया।

अर्थशास्त्र परिषद का गठन

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह के निर्देशन में अर्थशास्त्र परिषद का गठन किया गया। पदाधिकारी इस प्रकार हैं अध्यक्ष कु. रेणुका, उपाध्यक्ष-आशुतोश चंदेल, सचिव-ललिता रजक, सहसचिव अनिल कुमार।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि अध्ययन हेतु महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग कर अच्छे अंक प्राप्त करें। विभागाध्यक्ष डॉ.चन्द्रिका नाथवानी ने छात्रों को विभाग में विभिन्न अकादमिक गतिविधयों के संचालन के दायित्व का निर्वहन करने हेतु जानकारी दी। विभागीय प्राध्यापक डॉ.डी.पी.कुर्रे, सहायक प्राध्यापक डॉ (श्रीमती) सुमिता श्रीवास्तव, डॉ.महेश श्रीवास्तव तथा डॉ. (श्रीमती) मीना प्रसाद ने शुभकामनायें दी।

'बुजुर्गो का आर्शीवाद लेने वृद्धाश्रम पहुंचे वाणिज्य के छात्र'

महाविद्यालय के वाणिज्य व युथ रेड क्रॉस के छात्र/छात्राओं ने पारीनाला स्थित वृद्धाश्रम में जाकर उनके बीच 3 घंटे का समय व्यतीत किया तथा उनके जीवन के अनुभवों को सुना। विद्यार्थियों ने कहा कि इन बुजुर्गों ने अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर जो सीख हमें दी है हम सदैव उसका पालन करेंगे। विद्यार्थियों द्वारा इस अवसर पर सभी बुजुर्गों के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई थी। उल्लेखनीय है कि दिग्विजय महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय के शिक्षकों द्वारा हर वर्ष छात्र/छात्राओं को वृद्धाश्रम ले जाकर बुजुर्गों से मिलवाया जाता है। विभागाध्यक्ष डॉ. एच. एस. भाटिया के निर्देशन में आयोजित इस भ्रमण में विभाग के शिक्षक कु. सुमन बोथरा, कु. संगीता कौशिक, कु. पयस्विनि भारदीया, एवं कु. परिधि भण्डारी, कु. दिव्या पवार एवं विद्यार्थियों में कु. दीप्ति महोबिया, हिरामन दास, भूपेन्द्र वर्मा, अनिता, सौरभ सिंह, पारस सहित लगभग 30 छात्र/छात्राएं उपस्थित थे।

गणित विभाग में व्याख्यान

महाविद्यालय में व्याख्यानमाला की कड़ी में प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह के निर्देशन में ''गणित विषय के तार्किक अध्ययन'' पर में अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर के गणित विभाग के प्राध्यापक डॉ. ए.एस.रनदिवे ने गणित को कैसे तर्क के आधार पर विश्लेषण करके अध्ययन किया जाये, इस पर विस्तार से चर्चा की।

प्रेरक प्रसंगों को उदाहरण के तौर पर शामिल करके उन्होंने '' टेक पेन एंड टेक पेइन'' सूक्ति द्वारा विद्यार्थियों को अपने मस्तिष्क को खुला रखकर पुस्तक के प्रत्येक कथन से तर्क रखने की सलाह दी, ताकि गणित के मूल अवधारणा को ठीक से समझा जा सके। साथ ही विद्यार्थियों को गणित को बोझ समझने के बजाय उसके साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई।

डॉ. के.के. देवांगन ने अतिथि का परिचय दिया तथा विभागाध्यक्ष डॉ. शबनम खान ने विद्यार्थियों को प्रेरित किया। अतिथि स्वागत में गणित एसोशिएशन के अध्यक्ष व एम.एस.सी. अंतिम के छात्र देवेन्द्र ने उपस्थिति दी। प्रो. कविता साकुरे ने कार्यक्रम के अंत में आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रो. राजू खूटे, प्रो. विनय मसियारे एवं एम.एस.सी. पूर्व व अंतिम वर्ष के सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

कम्प्यूटर साइंस में व्याख्यान

महाविद्यालय के कम्प्युटर विभाग में प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह के मार्गदर्शन में अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में शासकीय घनश्याम सिंह गुप्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय , बालोद के कंप्यूटर विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एल. के. गवेल उपस्थित हुए. उन्होंने लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने ऑपरेटिंग सिस्टम तथा उसके प्रकार को बताते हुए लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम के कर्नल , शैल, शैल कमांड , एडिटर , तथा शैल स्क्रिप्टिंग के बारे में बहुत ही सरल तरीके से बताया इसके साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों से विषय संबंधित सवाल-जवाब भी किया तथा विद्यार्थियों के शंकाओ का समाधान भी किया। उक्त कार्यक्रम में कम्प्युटर विभाग के सहायक प्राध्यापक मिथिलेश देवांगन, गुलाम मुश्तफा अंसारी , देवेश्री चावड़ा, प्रियंका डागा, आशिश कुमार, गरिमा यादव , केवल सिंह तथा पोषन लाल एवं नरेंद्र वर्मा तथा स्नातक तथा स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

अभिप्रेरण पर व्याख्यान

महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग में अभिप्रेरण विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें दुर्ग विश्वविद्यालय से डॉ. अनिल जैन उपस्थित हुये तथा उन्होंने छात्र/छात्राओं के मध्य अभिप्रेरण विषय पर बोलते हुये कहा कि व्यवसाय प्रबंधन में अभिप्रेरण जीवन निर्वाह आवश्यकता से प्रेरित होते हुए आत्म विकास आवश्यकता तक की पूर्ति कर सकता है । इस विषय को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कैरियर में भी इसके महत्व को स्पष्ट किया । इस अवसर पर वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉ. एच. एस. भाटिया ने भी अभिप्रेरण विषय के महत्व पर प्रकाश डाला । इस अवसर पर वाणिज्य स्नातकोत्तर के लगभग 40 छात्र/छात्राओं सहित सहायक प्राध्यापक नूतन कुमार देवांगन, अतिथि व्याख्याता परिधि भण्डारी व पयस्विनि भारदीया उपस्थित थे।

रामानुजन जयंती

रामानुजन जयंती गणित विभाग द्वारा 'राष्ट्रीय गणित दिवस' के अवसर पर रामानुजन जयंती का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विभागाध्यक्ष डॉ. शबनम खान द्वारा श्रीनिवास रामानुजन के परिचय के साथ हुई । प्रो. हेमन्त साव ने रामानुजन के जीवन व उनके द्वारा किये गये गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्यों से विद्यार्थियों को अवगत कराया ।

इसी कड़ी में विद्यार्थियों को श्रीनिवास रामानुजन पर बनी लघु फिल्में, प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाई गई । इसी आधार पर विभाग द्वारा ''क्विज प्रतियोगिता'' का आयोजन भी किया गया । श्रीनिवास रामानुजन से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे गये एवं सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों को इनाम भी वितरित किये गये ।

बी.एस.सी. (गणित) के सभी वर्षों के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभागिता दी जिसमें बी. एस. सी. प्रथम वर्ष के चंदन, प्रवीण, तेजवंत, रवीन्द्र, योगेश, शिवानी, तोमेश, कुणाल व द्वितीय व तृतीय वर्ष के क्रमश: 08 एवं 09 विद्यार्थियों ने इनाम प्राप्त किया ।

विवेकानन्द जयंती पर भाषण प्रतियोगिता संपन्न

अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक संस्था 'साहित्य-प्रवाह' के सौजन्य से स्वामी विवेकानन्द की जयंती पर 12 जनवरी 2018 को दिग्विजय महाविद्यालय में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भाषण का विषय था- ''युवाओं के प्रेरक स्वामी विवेकानन्द।'' हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय की अध्यक्षता में संपन्न इस प्रतियोगिता में साहित्य-प्रवाह की संचालक डॉ. नलिनी पुरोहित मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। प्रथम स्थान प्राप्त रामचंद्र भार्गव, द्वितीय स्थान प्राप्त जीतेन्द्र कुमार और तृतीय स्थान प्राप्त कुमारी भूमिका को मुख्य अतिथि ने विजेता पदक एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किये।

कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. राय ने साहित्य-प्रवाह संस्था की रचनात्मक गतिविधियों पर प्रकाश डाला तथा मुख्य अतिथि के साहित्यिक अवदान का परिचय दिया। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. बी. एन. जागृत ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री राम आशीष तिवारी ने किया। डॉ. नीलम तिवारी और डॉ. गायत्री साहू ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई।

संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान

दिनांक 18.01.2018 को शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इस अवसर पर शासकीय संस्कृत महाविद्यालय रायपुर में पदस्थ संस्कृत के सहायक प्राध्यापक डॉ राघवेंद्र शर्मा ने श्काव्यमीमांसाश् विषय पर संस्कृत भाषा में व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम का प्रारंभ स्वस्तिवाचन तथा वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। तत्पश्चात सरस्वती पूजन एवं सरस्वती वंदना की गई। स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध के छात्र शत्रुघ्न ने डॉ शर्मा का स्वागत किया। सर्वप्रथम डॉ शर्मा ने आचार्य राजशेखर के विषय में जानकारी देते हुए उनके ग्रन्थ काव्यमीमांसा का परिचय दिया। तत्पश्चात काव्यमीमांसा ग्रन्थ के प्रथम आठ अध्यायों पर सविस्तार प्रकाश डाला। उनका सारगर्भित व्याख्यान छात्रोपयोगी सिद्ध हुआ। कार्यक्रम का संचालन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ ललित प्रधान आर्य ने किया एवं आभार प्रदर्शन विभागाध्यक्ष डॉण् दिव्या देशपांडे ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम संस्कृत भाषा में ही सम्पन्न हुआ।

अर्थशास्त्र विभाग

देश का विकास तथा रोजगार परस्पर संबंधित है। रोजगार से आय की प्राप्ति होगी तथा यह आगे उत्पादन व विनियोग को बढ़ाता है । आज यह आवश्यक है कि युवा वर्ग शिक्षा पूर्ण करके केवल रोजगार (विशेषत: सरकारी नौकरी) प्राप्ति के लिये ही राह न देखें वरन् स्वयं के व्यवसाय की ओर ध्यान देना चाहिए । युवा वर्ग के सामने कई ऐसे अवसर है जहां वह कौशल निर्माण सीखकर अपना स्वयं का कार्य कर आय अर्जित कर सकता है । इसके साथ-साथ वह अन्य लोगों को भी कार्य दे सकता है । शुरूआत हम छोटे पैमाने पर करके उसे बड़े स्तर पर कर सकते है । बुटिक कार्य, ब्यूटी पार्लर, कुकिंग में जहां लड़कियों के लिये अपार अवसर है वहीं कम्प्यूटर रिपेयर, लकड़ी के खिलौने, मेटल वर्क आदि के क्षेत्र में लड़के आगे बढ़ सकते है । श्रीमती गीता गुप्ता सहायक प्राध्यापक शासकीय महाविद्याल, कोहका के द्वारा अर्थशास्त्र विभाग में आयोजित अतिथि व्याख्यान में छात्रों को संबोंधित करते हुए उक्त बातें कही गयी । इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने छात्रों को संबोधित करते हुए प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी व स्वरोजगार हेतु जानकारी दी। विभागाध्यक्ष डॉ. चन्द्रिका नाथवानी ने विभागीय गतिविधि से अवगत कराया।

कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापक डॉ. डी. पी. कुर्रे, सहायक प्राध्यापक डॉ. (श्रीमती) सुमीता श्रीवास्तव, डॉ. मेहश श्रीवास्तव, डॉ. (श्रीमती) मीना प्रसाद तथा एम. ए. एव बी. ए. के विद्यार्थी उपस्थित रहे। संचालन डॉ. (श्रीमती) सुमीता श्रीवास्तव ने तथा धन्यवाद डॉ. (श्रीमती) मीना प्रसाद ने किया ।

भूगोल विभाग का जागरूकता कार्यक्रम

शासकीय दिग्विजय कॉलेज राजनांदगांव के भूगोल विभाग द्वारा ग्राम बम्हनी भाटा में डॉ. के. एन. प्रसाद एवं डॉ. अनिल कुमार मिश्रा के नेतृत्व में भूगोल स्नातकोश्रर परिषद द्वारा सामुदायिक भागीदारी के अग्रनी जल-जंगल-जमीन संसाधन जागरूकता कार्यक्रम का अध्ययन किया गया। इसमें हाई सकूल के 9वीं-10वीं तथा मीडिल स्कूल के 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ ग्राम पंचायत सरपंच, पंच एवं ग्रामीण बड़ी संख्या में मौजूद थे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में ग्राम पंचायत बम्हनी भाटा के सरपंच श्रीमती दिनेश्वरी साहू एवं पंचों द्वारा टीम का स्वागत किया गया। तत्पश्चात डॉ. प्रसाद ने सामाजिक जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए, विद्यार्थियों में वैज्ञानिक शिक्षा ग्रहण करने हेतु उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु भी प्रेरित किया।

पी.जी. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं ने मिट्टी निर्माण की प्रक्रिया, इसके क्षरण एवं रोकथाम के उपाय, जल संसाधन का स्रोत, उपलब्धता, गिरता स्तर, जल प्रदूषण व जल संवर्धन हेतु वाटर हार्वेस्टिंग, स्टॉप डैम, एनीकट, तालाब गहरीकरण तथा वन के लाभों तथा वर्षा में सहायक मिट्टी अपरदन में रोक, कार्बन डाईआक्साईड का उपयोग, इमारती लकड़ी का स्रोत, औषधीय पौधो का भण्डार, वन्य जीवों का सुरक्षित आवास

आदि हेतु वन विभाग पर लगान के साथ ही वनो के विकास में सामुदाय की भूमिका जैसे पहलुओं पर सचित्र व रोचक जानकारी प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों के बीच प्रश्नोश्री भी आयोजन किया गया जिसमें सफल 7 बच्चों को शिक्षको, सरपंचो व पंचो के द्वारा कलम प्रदान कर पुरस्कृत कर उनका उत्साह बढ़ाया गया। अंत में सरपंच द्वारा धन्यवाद ज्ञापन पश्चात् शिक्षको एवं छात्र-छात्राओं को स्वरूचि भोजन कराया गया।

एनसीसी की मतदाता जागरुकता रैली

प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह के मार्गदर्शन में एन. सी. सी. (आर्मी) महिला/पुरूष तथा एन.सी.सी. नेवल के कैडेट्स द्वारा दिनांक 09.11.2017 को स्वच्छता तथा मतदाता जागरूकता पर रैली निकाली गयी । रैली महाविद्यालय प्रांगण से प्रारंभ होकर महाविद्यालय के पूर्व गोद ग्राम आशा नगर में जाकर सम्पन्न हुई । रैली में स्वच्छता तथा मतदाता जागरूकता के नारे लगाये गये । आशा नगर पहुंच कर कैडेट्स ने वहां निवास कर रहे ग्रामीणों का हाल-चाल जाना तथा उनकी समस्याओं की जानकारी एकत्रित किये । वहां साफ-सफाई का कार्य किया गया तथा कैडेट्स ने अपना नाश्ता वहां के बच्चों के साथ मिलकर खाया ।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से कैप्टन पी. डी. सोनकर, मेजर किरण लता दामले, केयर टेकर राजू खुंटे तथा हिरेन्द्र बहादुर ठाकुर तथा एन. सी. सी. (आर्मी) महिला/पुरूष तथा एन.सी.सी. नेवल के कैडेट्स सम्मिलित हुए ।

वार्षिक क्रीड़ा उत्सव संपन्न

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में दो दिवसीय क्रीड़ा स्पर्द्धाओं के पहले दिन मेहंदी, रंगोली, सलाद स्पर्द्धा संपन्न हुई, जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढकर हिस्सा लिया। मेहंदी स्पर्द्धा में 60 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिसमें प्रथम भावना साहू तथा द्वितीय स्थान प्राची ने प्राप्त किया। सलाद स्पर्द्धा में 26 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जिसमें प्रथम दशरथ तथा द्वितीय दीपिका धुर्वे रही। पुष्पसज्जा में प्रथम प्रतिमा निषाद तथा देविका साहू, विद्या नागवंशी द्वितीय स्थान पर रही। प्रतियोगिता के दूसरे दिन आयोजित स्पर्द्धाओं में छात्र-छात्राओं की सहभागिता देखते ही बन रही थी।

कुर्सी दौड़ प्रतियोगिता में छात्रा वर्ग में कविता यदु प्रथम, योगिता कश्यप द्वितीय तथा छात्र वर्ग में टीकेन्द्र देवांगन प्रथम तथा इशुपाल द्वितीय रहे। पासिंगबाल में छात्रा वर्ग छन्नी साहू प्रथम तथा शालिनी टंडन द्वितीय रही। रस्सी कूद मे छात्रा वर्ग में कविता सिन्हा प्रथम खेमेश्वरी द्वितीय रही। स्लो-सायकल के छात्र वर्ग में हुलेश्वर प्रथम, महेश लांजेकर द्वितीय तथा छात्रा वर्ग में संतोषी सहारे प्रथम तथा हीना रावटे द्वितीय स्थान पर रही। सभी प्रतियोगिता डॉ. आर.एन. सिंह प्राचार्य के मार्गदर्शन तथा क्रीड़ा अधिकारी श्री अरुण चौधरी तथा महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों द्वारा संपन्न कराई गई।

पावर लिफ्टिंग एवं बाड़ी बिल्डिंग में शानदार प्रदर्शन

शैलदेवी महाविद्यालय अंडा द्वारा अंतर्महाविद्यालयीन पावर लिफ्टिंग एवं बाड़ी बिल्डिंग का आयोजन किया गया। इस स्पर्द्धा में दिग्विजय महा - विद्यालय के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। पावर लिफ्टिंग में 105 कि.ग्रा. में गौरव करोसिया, 62 कि.ग्रा. वर्ग में ललिता रजक ने प्रथम स्थान, 59 कि.ग्रा. में मोनिका सिन्हा ने द्वितीय तथा 59 कि.ग्रा. में आदित्य पराते एवं 50 कि.ग्रा. में नेहा सिन्हा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वेटलिफ्टिंग में 53 कि.ग्रा. में सरला साहू तथा 62 कि.ग्रा. में कोमल गुप्ता ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 62 कि.ग्रा. में अविनाश रजक ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बाड़ी बिल्डिंग स्पर्द्धा में 50 कि.ग्रा. में भूपेश पराते ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। खिलाड़ियों की इस उपलिब्ध पर जनभागीदारी अध्यक्ष श्री मधुसुदन यादव, प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह, क्रीड़ा संयोजक डॉ. शैलेन्द्र सिंह, क्रीड़ा प्रभारी श्री सुरेश पटेल, क्रीड़ा अधिकारी श्री अरूण चौधरी, श्री पी.के. हरी रामू पाटिल एवं सुनील सिंह ठाकुर ने बधाई दी।

याद किये गये शहीद

शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के इतिहास विभाग में 23 मार्च को शहीदों के याद में व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रुप में प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने कहा कि भारत को आजादी दिलाने के लिए अपने प्राणों की न्यौछावर करने वाले शहीदों वीर भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को देश कभी भूल नहीं सकता। अंग्रेज सरकार की नीतियों का विरोध करते हुए अपने प्राणों का बलिदान देने का अदम्य साहस इन क्रान्तिकारियों ने की। ऐसे क्रांतिकारियों को शत-शत नमन।

आज के परिपेक्ष्य में यह आवश्यक है कि इन क्रांतिकारियों के बलिदान को ध्यान में रखते हुए हम आजादी के मूल्य को समझे यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी। डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि 08 अप्रैल 1929 को दिल्ली में असेम्बलिय भवन में बम डाला गया। बम फेकने का उद्देश्य

किसी को मारना नहीं था बल्कि उस समय बांटे पर्चे में बताया गया कि उद्देश्य था बहरों को सुनाना।

इस पर्चे में यह स्पष्ट लिखा था कि भारतीय क्रांतिकारियों का उद्देश्य है समाजवाद की स्थापना और हमारा नारा है इंकलाब जिंदाबाद। भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु पर लाहौर षडयंत्र के अंतर्गत मुकदमा चलाया गया और उन्हें फांसी की सजा दी गई। प्रो. हीरेन्द्र बहादूर ठाकुर ने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जितना महत्व उदारवादियों, उग्रवादियों का है उतना ही महत्व क्रांतिकारियों का भी है। इतिहास में ऐसे अनेक क्रांतिकारी हुए जिन्होने देश को आजाद करने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। इस अवसर पर एम.ए. के छात्र-छात्राएं उपस्थिति थे।

स्वीप प्लान के तहत रंगोली प्रतियोगिता

''मतदाता जागरुकता'' अभियान के तहत जिला स्तरीय रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय द्वारा किया गया। स्वीप प्लान के नोडल अधिकारी डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने जानकारी दी कि प्रतियोगिता में जिले के 13 महाविद्यालयों की टीमो ने हिस्सा लिया।

डोंगरगढ़, अ. चौकी, लालबहादुर नगर, छुईखदान, खैरागढ़, छुरिया, मानपुर, आदर्श महा. राजनांदगांव तथा दिग्विजय महाविद्यालय के प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रथम स्थान दिग्विजय महाविद्यालय की निर्वर साहू ने तथा द्वितीय स्थान मॉडल कॉलेज की नेहा देवांगन ने प्राप्त किया। विजयी प्रतिभागियों को श्री एम.डी. तिगाला उप जिला निर्वाचन अधिकारी स्वीप, प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह एवं श्रीमती रश्मि सिंह जिला नोडल आफिसर द्वारा प्रतीक चिन्ह, प्रमाण पत्र, तथा प्रथम पुरस्कार 2000/- रुपये तथा द्वितीय पुरस्कार 1000/- रुपये की नगद राशि प्रदान की गई।

प्रतियोगिता के निर्णायक यामिनी कला केन्द्र के संचालक श्री रितेश देवांगन, श्री राकेश यादव एवं प्रो. निरुपमा साहू थे। उक्त प्रतियोगिता डॉ. मीना प्रसाद, प्रो. रीमा साहू, प्रो. कविता साकुरे, श्री रामू पाटिल द्वारा संपन्न करवाया गया।

ईंधन सुरक्षा पर कार्यशाला

महाविद्यालय में महिला विकास समिति द्वारा पेट्रोलियम एवं गैस मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में ईंधन की बचत तथा सुरक्षा के सन्दर्भ में कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में सुदीप दास मुख्य क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर व नेमेश देशमुख सहायक प्रबंधक भिलाई के निर्देशन में एल. पी. जी. गैस की बचत सुरक्षा व उचित उपयोग के संबंध में छात्र-छात्राओं को जानकारी दी गई । होम प्राइड के संचालक श्री नरेन्द्र डाकलिया ने एल. पी. जी. गैस में सिलेण्डर, रेग्युलेटर व पाईप के विषय में विस्तार से जानकारी देते हुए गैस का प्रयोग सावधानी पूर्वक करने की सलाह दी । कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. दिव्या देशपाण्डे, डॉ. अनिता शाहा, प्रो. कविता साकुरे तथा विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे । कार्यक्रम का संचालन डॉ. (श्रीमती) मीना प्रसाद तथा आभार प्रो. ललिता साहू द्वारा किया गया ।

नेशनल सेमिनार फिजिक्स

एडवांस्ड रिसर्च इन फिजिक्स-इट्स रोल इन द डेवलपमेंट ऑफ सोसाइटी

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव में सोमवार को 29 जनवरी 2018 को एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार हुआ। इसके मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित RTM नागपुर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉक्टर एस जे धोबले ने कहा हम शोध और कौशल विकास के क्षेत्र में बच्चों को इस प्रकार तैयार करें कि वह अपना रास्ता स्वयं चुन सके अर्थात आत्मनिर्भर बन सके जो कि शिक्षा जगत एवं समाज के लिए अत्यंत उपयोगी होगा, साथ ही जानकारी मिली कि वर्तमान मैं बिजली की बढ़ती हुई जरूरतों को देखते हुए LED प्रकाश स्त्रोत अन्य स्त्रोतों की तुलना में एक अच्छा विकल्प है क्योंकि पुराने बल्ब प्रकाश ऊर्जा के 90% भाग को उष्मा ऊर्जा में बदल देता है एवं 10% भाग उपयोग प्रकाश ऊर्जा के रूप में हो पाता है।

वही LED कम निवेश शक्ति में अधिक ऊर्जा की बचत करता है अर्थात इस व्याख्यान से यह स्पष्ट हुआ कि वर्तमान में नई तकनीकों को ध्यान में रखते हुए जहां बिजली की मांग लगातार बढ़ रही है वही अभी हम बिजली बचाने वाले उपकरण ज्यादा से ज्यादा लाएं तो ऊर्जा की बचत होगी।

उदाहरण के लिए यूनाइटेड स्टेट डिपार्टमेंट ऑफ एनर्जी द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार USA के प्रतिवर्ष एक तिहाई बिजली की बचत हो रही हैप् विशिष्ट अतिथि के रुप में एवं वक्ता के रूप में डॉ नंदिनी गर्ग वैज्ञानिक बीएआरसी ने बताया कि हमारे जीवन के बहुत सी ऐसी क्रियाएं हैं जो दाब पर आभार आधारित है लेकिन हम महसूस नहीं करते हमारे वायुमंडल का दाब प्रभावित करने वाले कारक तथा हमारे शरीर में दाब का प्रभाव एइस पर चर्चा की अर्थात हमें सभी वस्तुओं का उपयोग करते समय उसकी महत्ता को समझना चाहिएप् साथी प्रवक्ता के रूप में श्री सुदीप वर्मा वैज्ञानिक डीआरडीओ नई दिल्ली ने अपने व्याख्यान में विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न अर्धचालकों का प्रयोग कर सुरक्षा के क्षेत्र में क्या-क्या नए उपकरण बनाए जा सकते हैं एवं उपकरणों का सुरक्षा के क्षेत्र में क्या महत्व हो सकता है इस बारे में जानकारी दें। छात्र एवं शिक्षक अर्धचालक के बारे में शोध कर उनका उपयोग देश के सुरक्षा प्रणाली में बेहतर तरीके से कर सकते हैं जो देश एवं समाज के लिए हितकर रहेगा।

डॉ ए के श्रीवास्तव प्राध्यापक सी वी रमन विश्वविद्यालय बिलासपुर ने मृदा परीक्षण के बारे में विस्तार से बताएं उन्होंने अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया मृदा प्रदूषण से हमारे जीवन में क्या.क्या प्रभाव पड़ता है तथा मृदा का परीक्षण कर उस क्षेत्र के हिसाब से उपयोगी कृषि के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। जैसे खाद का मृदा पर प्रभाव, मृदा अपरदन आदि, उन्होंने वृक्षों के संरक्षण पर भी अपने व्याख्यान में उल्लेख किया क्योंकि वृक्षों के दोहन से भी मृदा प्रभावित होती है

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हैं निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ एस अग्रवाल भौतिकी के क्षेत्र में पिछली एक सदी के शोध तथा डॉक्टर सी वी रमन, डॉ जगदीश चंद्र बसु, डॉ भाभा आदि के योगदान का उल्लेख करते हुए प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों की साधना से अवगत कराया उन्होंने कहा कि विज्ञान के सामने आज भी कई चुनौतियां हैं। विशिष्ट अतिथि डॉक्टर नमिता ब्रम्हे ने कहा की विज्ञान के क्षेत्र में विद्यार्थियों तथा शोध कार्यकर्ताओं के कार्यों को सही पहचान मिले इससे समाज का उत्थान होगा।

संस्था के प्राचार्य डॉक्टर आर एन सिंह ने कहा कि शोध नई दृष्टि के आधार पर विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति नया रुझान पैदा करने से समाज का हित होगासमापन सत्र में डॉ डी पी बिसेन प्राध्यापक ने भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे नए आविष्कारों का उल्लेख करते हुए उन्हें समाज हित में जोड़ने की बात कही इस कार्यक्रम को सफल रूप से संयोजक प्रीति बाला टाँक विभाग अध्यक्ष ने संचालित किया एवं आभार प्रदर्शन आयोजक सचिव डॉ एस के पटेल ने किया।

बसंत पंचमी पर कार्यक्रम

दिनांक 22.01.2018 को संस्कृत विभाग में बसंत पंचमी के अवसर पर सरस्वती पूजन किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. आर.एन.सिंह जी भी उपस्थित थे। पुरोहित के रूप में उपस्थित हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शंकरमुनि राय ने संस्कृत मंत्रोच्चारणों के माध्यम से सरस्वती पूजन का कार्य संपादित करवाया। इस अवसर पर स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों एवं विभाग में कार्यरत प्राध्यापकों ने सरस्वती पूजन कर माँ सरस्वती से सद्बुद्धि प्राप्त करने का आर्शीवाद मांगा। इस अवसर पर हवन कार्य भी संपादित किया गया।

पुरस्कार... *राजनांदगांव। गत 24 एवं 26 फरवरी को दिग्विजय कॉलेज के तत्वावधान में मतदाता जागरुकता विषय पर भाषण, रंगोली, नाटक, गायन स्पर्धा रखी गई जिसमें प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।*

स्वामित्व एवं प्रशासक : शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय किलापारा, राजनांदगांव (छत्तीसगढ)। महाविद्यालय के पत्रकारिता विभाग द्वारा त्रैमासिक प्रकाशित। संरक्षक एवं प्रकाशक :- (प्राचार्य) डॉ. आर.एन.सिंह,
प्रधान संपादक :- डॉ. शंकर मुनि राय, समाचार संपादक :- डॉ. श्रीमति बी. नन्दा जागृत। e-mail : shankermunirai@gmail.com.phone- 9893863548 मुद्रक : सम्मान पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि., बलदेव बाग, राज.